संस्थान में अनुसंधान गतिविधियों की झलक

सी एम एफ आर आइ को भा कृ अनु प का सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान संस्थान पुरस्कार

केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सी एम एफ आर आइ) को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान संस्थान के रूप में घोषित किया गया। सी एम एफ आर आइ ने भा कृ अनु प के बड़े श्रेणी संस्थानों के लिए सर्वोच्च पुरस्कार सरदार पटेल उत्कृष्ट पुरस्कार जीत लिया जिसमें 10 लाख रूपए नकद पुरस्कार, एक चांदी का फलक, प्रमाण पत्र एवं उद्धरण शामिल हैं। वर्ष 2014 से 2019 तक की अवधि के दौरान समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान में सी एम एफ आर आइ द्वारा किए जा रहे उत्कृष्ट कार्य के लिए यह अंगीकार प्राप्त हुआ। सी एम एफ आर आइ को दूसरी बार यह पुरस्कार प्राप्त हो रहा है। समुद्री खाद्य मछली एवं अलंकारी मछलियों के लिए विविध आधुनिक अनुसंधान गतिविधियां जिनमें समुद्री संवर्धन प्रौद्योगिकियों का विकास, खुला समुद्र पिंजरा मछली पालन, समुद्री शैवाल पैदावार,

Indian Council of Agricultural Research

Certificate

SARDAR PATEL OUTSTANDING ICAR INSTITUTION AWARD-2019

(For Large Institute Category)

is presented to

ICAR-Central Marine Fisheries Research Institute

Kochi, Kerala

16 July, 2020
New Delhi

(T. Mohapatra)
Secretary (DARE) &
Director General (ICAR)

(Narendra Singh Tomar)
Agriculture & Farmers Welfare Minister, GoI
& President, ICAR Society

सर्वश्रेष्ठ अनुसंधान पुरस्कार-2019 का प्रमाण पत्र

एकीकृत बहु–पौष्टिक जलजीवपालन (आइ एम टी ए) और प्रजनन एवं संतति उत्पादन प्रौद्योगिकियां शामिल हैं, मछुआरों की आय बढाने के लिए लक्षित सी एफ आर आइ को देश के 110 कृषि एवं संबंधित अनुसंधान संस्थानों में से उच्च पद प्राप्त होने में सहायक निकलीं। सी एम एफ आर आइ के नीति मार्गनिर्देशों का परास तैयार करने के प्रयास के रूप में न्यूनतम वैधिक आकार पर कार्य (एम एल एस), समुद्री संवर्धन पर राष्ट्रीय नीति और समुद्री मात्स्यिकी संपदाओं के टिकाऊ उपयोग के लिए पारितंत्र पर आधारित प्रबंधन का अच्छी तरह से सराहना की गयी। समुद्री जीवों से टाइप 2 मधुमेह, आर्थ्राइटिस, मोटापा, थायराइड और उच्च रक्तचाप के उपचार हेतु न्यूट्राज़्यूटिकल उत्पादों को विकसित करने की अनुसंधान पहल भी पुरस्कार जीतने में मुख्य भूमिका निभाई है। इसके अतिरिक्त संस्थान ने कई बाह्य रूप से वित्त पोषित परियोजनाएं जैसे कि कोबिया और सिल्वर पोम्पानो के लिए राष्ट्रीय ब्रूड बैंक और डी बी टी द्वारा वित्त पोषित उत्कृष्टता और नवाचार केंद्र का नेतृत्व किया। इस अवधि के दौरान संस्थान ने कई पेटेंट प्राप्त किए।

माननीय उप राष्ट्रपति श्री एम. वेंकैया नायडू द्वारा राष्ट्र को जोन स्नाप्पर बीजों का समर्पण

संस्थान के विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र में आयोजित कार्यक्रम में माननीय उप राष्ट्रपति श्री एम. वेंकैया नायडू ने स्नाप्पर बीज उत्पादन प्रौद्योगिकी का औपचारिक

माननीय उप राष्ट्रपति सभा का संबोधन करते हुए

जोन स्नाप्पर मछली बीजों के विमोचन का दृश्य

रूप से विमोचन और राष्ट्र को जोन स्नाप्पर बीजों का समर्पण किया। माननीय उप राष्ट्रपति ने किसानों और श्री मुट्टमसेट्टी श्रीनिवास राव, माननीय पर्यटन, संस्कृति और युवा कार्यक्रम मंत्री, आन्ध्र प्रदेश सरकार, श्री विनय चंद, जिलाधीश और जिला मजिस्ट्रेट, विशाखपट्टणम, डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प – सी एम एफ आर आइ और श्री के. मुरलीधरन, सदस्य, संस्थान प्रबंधन समिति भा कृ अनु प – सी एम एफ आर आइ की उपस्थिति में दिनांक 7 दिसंबर, 2020 को दो प्रगतिशील मछली पालनकारों को स्नाप्पर बीज का समर्पण किया।

वैज्ञानिक समूह का अभिसंबोधन करते हुए माननीय उपराष्ट्रपति ने भा कृ अनु प–सी एम एफ आर आइ द्वारा देश के समुद्री संवर्धन और समुद्री प्रग्रहण मात्स्यिकी के विकास में किए गए प्रयासों की सराहना की। राष्ट्र में समुद्री मात्स्यिकी के टिकाऊ विकास में सहयोग देनेवाले संस्थान के प्रयासों और सुझाव प्रदान करनेवाले वैज्ञानिकों की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि समुद्री पिंजरा मछली पालन और वाणिज्यिक प्रमुख पख मछलियों के गुणतायुक्त बीजों की उपलब्धता राष्ट्र के समुद्री संवर्धन विकास में भा कृ अनु प–सी एम एफ आर आइ की अग्रणी उपलब्धि है। उन्होंने यह भी कहा कि स्नाप्पर बीज उत्पादन और पिंजरों में समुद्री संवर्धन पशु प्रोटीन के सस्ते और सबसे अच्छे स्रोत के रूप में समुद्री पख मछली की घरेलू मांग की पूर्ति करेंगे। ओमेगा-3 वसायुक्त अम्ल का समृद्ध स्रोत होने के कारण स्नाप्पर का उपभोग जनता के स्वास्थ्य को सुधार करने और इसका पालन मछली पालनकारों के लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। मांग और आपूर्ति के बीच देश में प्रचलित मौजूदा अंतर केवल समुद्री पिंजरा मछली पालन के द्वारा दूर किया जा सकता है और प्रजातियों के चयन में विविधता लाने की ज़रूरत है।

रोज़गार सृजन

समुद्री पिंजरा मछली पालन के विस्तार से रोजगार सृजन में भारी वृद्धि की उम्मीद है, क्योंकि उत्पादन की गयी प्रत्येक टन मछली के लिए, प्रत्यक्ष (पालन) या अप्रत्यक्ष रूप से (हैचरी, खाद्य मिल, विपणन और अन्य संबंधित गतिविधियों में) तीन लोग लगे हुए हैं। राष्ट्रीय समुद्री संवर्धन नीति 2019 और राष्ट्रीय मात्स्यिकी नीति 2020, जो तैयारी के अंतिम चरण में है, तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए उप राष्ट्रपति ने भा कृ अनु प–सी एम एफ आर आइ की सराहना की। पख मछलियों, कवच मछलियों एवं समुद्री शैवालों

माननीय उप राष्ट्रपति अनुसंधान कार्यविधियों का निरीक्षण करते हुए

में एकीकृत बहुपौष्टिक जलजीव पालन का विकास संस्थान की मुख्य उपलब्धि है और इसके लिए उन्होंने डॉ. ए. गोपालकृष्णन, निदेशक, भा कृ अनु प–सी एम एफ आर आइ की सराहना की।

प्रौद्योगिकी

संस्थान द्वारा समुद्री संवर्धन प्रजातियों की प्राथमिकता सूची तैयार की गयी और इसमें जोन स्नाप्पर को प्राथमिक स्थान प्रदान किया गया। विश्व भर में स्नाप्पर की अधिक मांग है और भारत में इस मछली का फार्म-गेट मूल्य प्रति किलोग्राम के लिए 400 रुपये है। ये प्रजातियाँ तेज़ वृद्धि दर, प्रभावी खाद्य रूपांतरण, मांस की आकर्षक गुणवत्ता और उच्च उपभोक्ता वरीयता के कारण समुद्री संवर्धन के लिए उत्कृष्ट हैं। विश्व भर में, केवल सिंगपुर में सीमित सफलता के साथ जोन स्नाप्पर बीजों का उत्पादन किया गया है। इसको ध्यान में रखते हुए, भा कृ अनु प–सी एम एफ आर आइ के विशाखपट्टणम क्षेत्रीय केंद्र में डेढ़ साल पहले ब्रूडस्टॉक विकसित करना शुरू किया। वर्ष के आरम्भ में परिपक्व मछलियों को प्रजनन के लिए प्रेरित किया गया। इसके बाद, निरंतर बीज उत्पादन प्राप्त किया गया। स्नाप्पर बीजों का उत्पादन देश में प्रथम घटना है। स्नाप्पर बीजों के स्थायी उत्पादन से भारतीय समुद्री संवर्धन में पिंजरों में पालन की गयी पख मछली के उत्पादन में भारी वृद्धि हुई।

पिछले डेढ़ दशक के दौरान, भारत के समुद्री मछली अवतरण में 3 और 4 मिलियन टन के बीच उतार चढ़ाव हुआ है। प्रग्रहण से उत्पादन बढ़ने की गुंजाइश सीमित होने के कारण समुद्री संवर्धन पर समान रूप से जोर दिया गया है। विश्व भर में उपलब्ध समुद्री संवर्धन प्रौद्योगिकियों में से समुद्री पिंजरा मछली पालन सबसे अधिक आशाजनक है। देश में वर्ष 2005 के दौरान समुद्री पिंजरा मछली पालन का आरम्भ हुआ और वर्ष 2007 में विशाखपट्टणम में एक पिंजरे से 3 टन समुद्री बास का पहला सफलतापूर्वक फसल संग्रहण किया गया। पिंजरा मछली पालन की असफलता का मुख्य कारण गुणतायुक्त बीजों की अनुपलब्धता है। इसको ध्यान में रखते हुए भा कृ अनु प–सी एम एफ आर आइ ने ब्रूडस्टॉक का विकास किया और तमिल नाडु के मंडपम में कोबिया, सिल्वर पोम्पानो के बीजों और विशाखपट्टणम में ग्रूपर, भारतीय पोम्पानो के बीजों का भारी मात्रा में उत्पादन शुरू किया। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय ब्रूड बैंक सुविधाएं केरल के विषिंजम और तमिल नाडु के मंडपम में स्थापित की गयी। पिछले अर्ध दशक के बाद बीजों का स्थायी उत्पादन हासिल हो गया और मछली पालानकार एवं उद्योगों को बीजों का वितरण किया गया। कुछ प्रजातियों पर निर्भर होने के कारण बड़े पैमाने पर समुद्री संवर्धन को स्वीकार करने में कठिनाईयाँ है और प्रजातियों का विविधीकरण समय की आवश्यकता है।

भा कृ अनु प-सी एम एफ आर आइ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधीन प्रमुख मात्स्यिकी संस्थान है जो समुद्री प्रग्रहण मात्स्यिकी और समुद्री संवर्धन पर अनुसंधान में सक्रिय रूप से कार्यरत है। समुद्री प्रग्रहण और पालन मात्स्यिकी के अनुसंधान में बहु-विषयक दृष्टिकोण से संस्थान को दुनिया में किसी भी सुव्यवस्थित समुद्री प्रयोगशाला की तुलना में प्रमुख संस्थान के रूप में मान्यता प्राप्त हुई है। संस्थान के अनुसंधान प्रयासों के सहयोग द्वारा जी डी पी वृद्धि में समुद्री मात्स्यिकी का योगदान हुआ है और इसका प्रभाव मछुआरा, मछली पालनकार, मात्स्यिकी नीति और प्रबंधकों पर पड़ा है। मात्स्यिकी के क्षेत्र में महत्वपूर्ण वैज्ञानिक योगदान देने के कारण संस्थान को वर्ष 2019 और 2007 के दौरान दो बार भा कृ अनु प के सरदार पटेल उत्कृष्ट संस्थान पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

वर्तमान सफलता जैव प्रौद्योगिकी प्रभाग (डी बी टी), भारत सरकार द्वारा वित्तपोषित “समुद्री संवर्धन के लिए नई प्रजातियों का विकास: समुद्री पख मछली जोन स्नाप्पर, लूटजानस जोनी” (BT/PR32023/AAQ/3/944/2019) विषयक परियोजना का परिणाम है । भा कृ अनु प–सी एम एफ आर आइ ने परियोजना का वित्तपोषण करने के लिए डी बी टी को आभार व्यक्त किया।